प्रकाशन की तिथि 07.03.2016

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 39 अंक 3

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 300 रुपये

मार्च 2016 विक्रम सम्वत् 2072 फाल्गुन-चैत्र

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011–23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

राम भक्ति तथा राम मन्दिर

विधाता ने हमारे ग्रह पृथ्वी पर भारत वर्ष को एक नैसगिकि ऐक्य एक दैवी पूर्णता के रूप में संवारा है। भारत वर्ष को संवारते हुए विधाता ने हमारे देश को अनेक दैवी वरदान भी प्रदान किए हैं। इन वरदानों के कारण का अतीत काल से इतना गरिमा पूर्ण स्वरूप होते हुए भी यहां यदा कदा कुछ ऐसे विषय उभरते हैं जिन के कारण समाज में असहज वातावरण बन जाता है। राम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण भी एक ऐसा ही विषय है। यह विषय जहां एक पक्ष की संवेदनाओं से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है तो दूसरा पक्ष इसे अनावश्यक रूप से प्रतिष्ठा का विषय बनाए हुए हैं किसी भी सामाजिक उलझन का समाधान पाने के लिए हमें कुछ उन वरदानों पर ध्यान देना चाहिए जो परमात्मा ने हमारे देश को विशेष रूप से प्रदान किए हैं। यह वरदान हमारी संस्कृति का मूल आधार हैं। इन वरदानों में चार प्रमुख इस प्रकार हैः–

(1) अनुपम आध्यात्मिक ज्ञान
(2) सर्व सुफला वसुन्धरा
(3) अनन्त सुखदायिनी प्रकृति
(4) सामाजिक एवं परिवारिक सम्बन्धों की सात्विक परम्पराएं। वेदों ने भी अपनी वाणी से भारत की महिमा का गुणगान इस प्रकार किया है।

"तस्य हिरण्य वक्षसे पृथिव्या
अकरं नमः।।" (अः12.1.26)

अर्थः– जिस भूमि के भीतर सुवर्ण आदि प्रशस्तधातुएं विद्यमान हैं मैं उस मातृ भूमि की वन्दना करता हूँ।

–ब्रह्मदेव भाटिया

भारत भूमि के पावन स्वरूप पर अनुरक्त होकर भगवान स्वयं यहां के मानव परिवेश का अंग बन कर भारत भूमि पर अवतरित होते रहे हैं।

भगवान, त्रेता युग में, कृष्ण के रूप में मथुरा में, वासुदेव नन्दन के रूप में अवतरित हुए। अपनी अपनी अनेक लीलाओं के माध्यम से मानव सम्बन्धों की सात्विक मर्यादाओं का ज्ञानबोध करा गए। अर्जुन के माध्यम से कर्म योग, ज्ञान योग तथा भक्ति योग का दर्शन प्रदान कर गए। यह दर्शन हम सब तक श्रीमद भगवद् गीता के रूप में पहुचा है। श्री कृष्ण गीता में वचन दे गए "धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।"

भगवान, द्वापर युग में, अयोध्या में, दशरथ नन्दन, राम चन्द्र के रूप में अवतरित हुए। भगवान राम ने अपनी जीवन लीलीओं के माध्यम से मानव सम्बन्धों की सात्विक मर्यादाओं अनेक रूपों में प्रकट किया है। तभी श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम राम कहा जाता है।

बनवास काल में श्री राम के जीवन में अथाह बाधाएं आईं। प्रकृति के विभिन्न रूप श्रीराम को बाधाओं से मुक्त करने में सहायक हुए। इन रूपों की सहायता से अधिक महत्व उस भाव का है जिसके वशीभूत हो प्रकृति के विभिन्न रूप सहायक बने।

एक बार श्रीराम गंगा तट के एक निर्जन स्थान पर पहुचे। उन्हें गंगा पार आना था सहसा एक खेवट अपनी नाव सहित आ पहुंचा। श्रीराम ने पार ले जाने को कहा। खेवट ने बिना मोल पार जाने से मनाकर दिया। मोल था श्री राम के चरणों को स्पर्श करना। खेवट ने श्री राम, सीता, लक्ष्मण के चरण स्पर्श कर उन्हें नाव पर बिठा गंगा पार ले चला जगत के खेवनहार को एक खेवट अपनी नाव में गंगा पार ले जा रहा था।

बनवास काल में लंकाधिपति रावण ने सीता जी का छल कपट से अपहरण कर उन्हें अशोक वाटिका में छिपा कर रखा था। श्री राम के लिए दुरूह कष्टों का काल प्रारम्भ हो गया था। सीता जी का पता लगाना, उन तक पहुंचना, उनको रावण के बन्धन से मुक्त कर वापस लाना। एक कष्ट पूर्ण कार्यों की लम्बी श्रृंखला उनके समक्ष थी। प्रकृति के विभिन्न रूप श्रीराम के सहायक बने। पवन पुत्र हनुमान की भक्ति विशेष सहायक रही। कष्टों की दुरुह श्रृंखला को पार करते हुए श्री राम अनुज लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, अंगद, नल, नील, वानर सेना संग भारत के दक्षिणी छोर तक आ पहुंचे। लंका के मार्ग में विशाल सागर ठांठे मार रहा था। अब बाधा विकराल थी। अनेक विचारों के पश्चात पुल बनाना एक मात्र उपाय सूझा। न साधन थे न सामग्री थी। था तो चारों ओर की निशब्द प्रकृति, वानर सेना तथा उस की राम भक्ति। नल नील ने रामभक्ति को अवलम्ब बना, प्रकृति की हर वस्तु को साधन बना पुल का निर्माण शुरू किया। प्रकृति सहयोग को उद्यत प्रतीत हुई। वायु तथा सागर शान्त स्थिर हो गए। हनुमान, अंगद, सुग्रीव भी पुल निर्माण में व्यस्त हुए। एक गिलहरी श्रीराम के चरणों में बैठी थी। उससे भी निष्क्रिय न रहा गया। उस ने जा कर सागर जल से अपना तन भिगोया, फिर रेत में लथ पथ हुई, जाकर अपने तन की रेत को झाड़ दिया। पुल के पूरा होने तक वह इसी प्रकार पुल पर रेत डालती रही। पुल के पूरा हो जाने पर गिलहरी श्रीराम के चरणों में आकर बैठ गई। श्री राम ने गिलहरी को उठा कर अपनी गोद में रख, उस की पीठ पर आशीर्वाद का हाथ फेर, उसे वापस अपने चरणों के पास रख दिया श्रीराम अपने दल वल सहित पुल से लंका की ओर चल पड़े। गिलहरी हाथ जोड़े बैठी श्रीराम को निहारती रही। कहते हैं श्रीराम की आशीर्वाद से गिलहरी की पीठ पर धारियां बन गई जो आज हर गिलहरी की पीठ पर दिखाई देती है।

गोस्वामी श्री तुलसी दास ने राम चरित मानस के रूप में राम कथा को कलयुग में हर घर में पहुंचा दिया है। राम कथा हर प्रदेश की भाषा में भी लिखी गई। बंगाल के एक अफगान शासक ने रामायण का अनुवाद बंगाली में करवाया था। राम कथा अन्य अनेक देशों में भी लिखी गई है। राम कथा के प्रसार पर एक पादरी विद्वान श्री कामिल ब्रल्के ने बड़ी श्रद्धा से शोध ग्रन्थ लिखा है। गोस्वामी तुलसी दास को माता गंगा के प्रति अगाध श्रद्धा थी। एक बार ग्रीष्म ऋतु में वह बनारस में गंगा तट पर एक कुटिया में रह रहे थे। गंगा घाटों से दूर वह रही थी। स्वामी जी की कुटिया तथा घाटों के बीच रेत का मैदान था। अनेक लोग प्रति दिन स्वामी जी से राम कथा सुनने आते थे। लोगों के आने जाने से घाटों से कुटिया तक एक पगडंडी बन गई थी। लोगों में यह

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

धारण थी की श्रीराम प्रति दिन तुलसी दास से मिलने आते हैं। अतः उनके पैरा की मिट्टी इस पगडंडी पर पड़ी होगी। उन्होंने कथा में सुना था कि किसी ऋषि के शाप से देवी अहल्या शिला बन गई थी। उस शिला से एक बार श्रीराम का पैर टकराया तो श्रीराम के पैर की धूल शिला पर पड़ गई जिस से शिला शापमुक्त हो पुनः परी रूप में आ गई थी। लोग आते जाते पगडंडी की धूल उठा सिर पर लगाते जिस से श्रीराम के पैरों की धूल उनके भी सर पर पहुचं उन्हें हर कष्ट से मुक्त रखे।

गोस्वामी तुलसी दास का समय महान मुगल सम्राट अकबर का युग था। सम्राट अकबर के नौ रतनों में एक "अब्दुल-रहीम खन-ए-खाना" हिन्दी के महान कवि थे। वह मुगल राजधानी आगरा के महल में रहते थे। रहीम तुलसी के विषय में जानते थे तथा उनके प्रति गहरे आदर का भाव भी रखते थे। रहीम प्रतिदिन महल में अनेक गुणी व्यक्तियों से भेंट करते थे। परन्तु तुलसी दास से रहीम महल में भेंट नहीं कर पाए थे। एक दिन रहीम के मन में तुलसी दास से भी भेंट करने की इच्छा जागृत हुई। रहीम ने दो सयाने घुड़सवारों को मौखिक सन्देश तथा लिखित निमन्त्रण पत्र दे कर बना रस तुलसीदास को निमन्त्रित करने के लिए भेजा। घुड़ सवार भागते हुए बनारस में गंगा तट पर तुलसी दास की कुटिया तक पहुंचे। उन्होंने बड़ी सम्मान पूर्वक तुलसी दास को रहीम के निमंत्रण पत्र के साथ निमन्त्रण का सन्देश भी सुनाया। तुलसी दास ने रहीम का सन्देश सुना निमन्त्रण पत्र पढ़ा। कुछ देर मौन रहे। फिर कहा जब एक कवि ने दूसरे कवि से मिलने की इच्छा जागृत होती है तो वह भागा भागा उसके पास पहुंच जाता है- सन्देश या निमन्त्रण पत्र भेजना कवियों की परम्परा नहीं हैं। घुड़सवारों ने आगरा लौटकर रहीम को तुलसीदास का उत्तर यथावत सुना दिया। रहीम उत्तर सुनकर मौन हो गए। सोचने लगे.... सोचा था तुलसी प्रसन्न हो चले आएगें. ...परन्तु....अब जाएं....न जाएं एक दिन विचारों में उलझे रहे। अन्त में जाने का निश्चय कर लिया। सेवादारों को बुलाकर बनारस जाने का निर्णय सुनाया। अकबर महान के नौ रतन थे रहीम। झाम से सजे हाथी पर रहीम सवार हुए, साथ कुछ घुड़सवार भी चले। दो दिन की यात्रा के पश्चात सायं काल बनारस पहुंचे। गंगा किनारे रेत के मैदान तक पहुंचे तो तुलसी दास की कुटिया दिखाई देने लगी। गोस्वामी जी के प्रति आदर स्वरूप हाथी से उतर कर पैदल, कुटिया की ओर, चलने लगे। बाहर ताम झाम तथा घोड़ों की आवाज़ सुन तुलसी दास समझ गए कि रहीम का आगमन हुआ है। तुलसी दास खान-ए-खाना रहीम का स्वागत करने कुटिया से बाहर निकल आए। दूर देखा रहीम पैदल चले आ रहे हैं। दूर उन का हाथी सिर पर रेत डाल रहा है रहीम के पास आने पर तुलसी ने हाथी की ओर देखते हुए समस्या पढ़ी। धूरि धरति निज सीस पर कहु रहीम कहि काज। रहीम ने तुरंत समस्या पूर्ति की : जा रज मुनि पत्नी तरी सो ढूंढत गजराज।। दोहा समस्या पूर्ति करने वाले कवि का हो जाता है। यह दोहा रहीम के प्रसिद्ध दोहों में से एक है। रहीम से समस्या पूर्ति सुन कर तुलसी ने रहीम का हाथ अपने हाथ से पकड़ लिया। दोनों महा कवियों ने अपने दोनों हाथों से एक दूसरे के हाथ पकड़ लिये। राम कथा वाचक तथा राम कृपा याचक की परछाई गंगा की धारा में दिखाई देने लगी थी। किनारे घंटियाँ बजने लगी थीं। गंगा जी की आरती के स्वर वातावरण को पावन करने लगे थे। वर्तमान काल की वैज्ञानिक उपलब्धियों ने आज के संसार को भूमण्डलीय युग में प्रविष्ट कर दिया है। संसार के सभी भाग एक दूसरे के निकट आ गए हैं। सारा मानव समुदाय एक वैश्विक समाज का रूप लेने लगा है। विभिन्न संस्कृतियों के लोग अपनी सस्कृति का विश्व पटल पर विकास देखने की इच्छा रखते हैं। वैश्विक समुदाय द्वारा संस्कृति का वही रूप अगिंकृत होगा जिसमें मानव सम्बन्धों को गरिमा पूर्ण स्थायित्व प्रदान करने की सात्विक मर्यादाएं होंगी तथा प्रकृति संग स्नेह सत्कार के सम्बन्धों का दर्शन होगा।

सन् 1915 के नवम्बर मास में "रामलीला" पर अन्तराष्ट्रीय आयोजन हुआ। यह अन्तराष्ट्रीय कान्फ्रैंस,सात दिन तक, दिल्ली के इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित की गई। इन दिनों में यहां आठ प्रकार की राम लीलाओं का प्रदर्शन हुआ। यहां कई लोक समूहों ने अपनी प्रस्तुति का प्रदर्शन किया "राम की शक्ति पूजा" की प्रस्तुति ने विशेष प्रशंसा पाई। इस कान्फ्रैंस में अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

राम कथा विश्व को परिवारिक तथा सामाजिक सम्बन्धों की सात्विक मर्यादाएं प्रदान करती है।

द्वापर युग में कौशल राज्य के राजा दशरथ की राजधानी अयोध्या थी। श्रीराम, दशरथ नन्दन, के रूप में अयोध्या में अवतरित हुए। राम का शैशव काल की खेलने कूदने तथा परिवारिक कार्य कलापों की सारी कहानियां अयोध्या के कण कण से जुड़ी हुई हैं। अयोध्या का कण कण राम गाथाओं से जुड़ा हुआ है। अयोध्या का कण कण राम मय है। राम भक्तों की आस्थाएं अयोध्या के कण कण से जुड़ी हैं तथा अयोध्या का कण कण राम भक्तों की आत्मा से जुड़ा है। यदि किसी ने बाहर से आकर अयोध्या में किसी समय, अयोध्या के प्रति ना समझी के कारण कोई ऐसा आकार निर्मित कर दिया जिस का यहां के निवासियों के लिए कोई उपयोग नहीं था तथा एकत्यक्त अवस्था में खड़ा था, यह आकार राम जन्म भूमि पर राम भक्तों की संवेदनाओं के लिए एक अप्रिय अनुभूमि था तो ऐसी अवस्था में यदि राम भक्तों ने अयोध्या की भूमि को इस अवस्था से मुक्त करा लिया तो किसी भी प्रकार से किसी को मनोमालिन्य का वातावरण नहीं बनाना चाहिए।

सन् 1000 ई. से एक नए सामाजिक प्रभाव ने भारत में पदार्पण करना प्रारम्भ किया। इस आगमन ने भारतीय संस्कृति के स्वरूप को संसार के समक्ष कैसे सम्मान जनक ढंग से, प्रस्तुत करने का महत कार्य किया इस विषय पर इतिहासकारों का ध्यान कम गया है। ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से अरब देशों के विद्वान, भारतीय ज्ञान के हर विषय को सभी ग्रन्थों का अरबी भाषा में अनुवाद करने में लगे हुए थे।

सन् 1000 ई. में महमूद ग़ज़नवी ने भारत पर उतर पश्चिम से पहला आक्रमण किया था। इसी आक्रमण के साथ भारत में उतर पश्चिम से नए सामाजिक तत्वों ने प्रवेश करना शरू किया था। इसी युग में अरब देशों के विद्वान भारतीय की हर पुस्तक का अरबी में अनुवाद कर लेने को आतुर थे। अब्बासी खलीफ़ा अलमन्सूर ने तो एक विशेष विभाग "बैतुल हिकमत" पुस्तकों का अनुवाद करने के लिए ही स्थापित किया हुआ था। अरब विद्वानों के लिए संस्कृत भाषा एक बड़ी समस्या थी। महमूद ग़ज़नवी के साथ एक बहुभाषाविद उदभट ईरानी विद्वान "अलविरूनी" भी भारत आया था। उसने भारत के विद्वान पण्डितों से संस्कृत में प्रवीणता अर्जित की। उस ने भारत के हर ज्ञान की पुस्तक-विज्ञान-गणित, खगोल, आध्यात्म, दर्शन, धर्म ज्योतिष, इतिहास, भूगोल, आदि को प्राप्त किया। हर विषय के ग्रन्थ का परिश्रम पूर्वक अध्ययन कर उस का यथावत रूप में अरबी में अनुवाद किया। इस अनुवाद को उसने 80 अध्यायों के एक विशाल ग्रन्थ में संग्रहीत किया। अपने ग्रन्थ में उसने भारत के सामाजिक जीवन, परम्पराओं, त्योहारों तथा नगरों का भी वर्णन किया है। "अल-विरूनी" के इस ग्रन्थ को आज संसार में "किताब-उल-हिन्द" के नाम से जाना जाता है। किताब-उल-हिन्द का अनुवाद संसार की हर पमुख भाषा में हुआ है। यह ग्रन्थ संसार के हर प्रमुख देश में प्रकाशित हुआ है "किताब-उल-हिन्द" को भारत, पाकिस्तान तथा बंगलादेश के सरकारी प्रकाशन गृहों ने प्रकाशित किया है। किताब-उल-हिन्द भारतीय ज्ञान का ज्ञान कोष है तथा भारत विदों का सन्दर्भ ग्रन्थ है। इस प्रकार जहाँ सन 1000 में नई धारणाओं ने भारत में प्रवेश पाया वहां भारत के सम्पूर्ण ज्ञान को संसार भर में पहुंचने का अवसर मिला है।

भारतवर्ष अपने भौगोलिक स्वरूप, प्रकृति, समाज के मर्यादित आचरण मानवीय चिन्तन, कलाओं के खुम्बित स्वरूप का नाम है। सूफी सन्त अपनी वाणी द्वारा, भारत के इस गरिमामय, स्वरूप को मुखरित करते रहे हैं। अमीर खुसरो भारत की सूफी परम्परा के प्रतिष्ठित सन्त थे। खुसरो सूफी सन्त निज़ामुद्दीन औलिया के प्रिय शिष्य थे। अमीर खुसरो का उर्स प्रतिवर्ष निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह पर होता है। अमीर खुसरो अरबी, फारसी, संस्कृत, हिन्दी आदि

अनेक भाषाओं बहुभाषा विद विद्वान थे। अमीर खुसरो लेखक, कवि, गाय, संगीतकार बहु आयामी व्यक्तित्व के विद्वान कलाकर थे। उन्होंने फारसी हिन्दी अरबी में रचनाएं की हैं। उनकी फारसी रचनाओं के कुछ अंश आज के सामाजिक वातावरण में सहचारिता का रंग भरने के लिए आदर्श हैं।

अमीर खुसरो के फारसी के कुछ महत्व पूर्ण वाक्य।

1) किशवरे हिन्द अस्त वहिश्ते बज़मी।

अर्थ – भारत पृथ्वी का स्वर्ग है।

2) हस्त मेरा मौलिद व मावा व वतन।

अर्थ – हिन्द मेरी जन्म भूमि मेरा देश है।

3) हुब्बे वतन हस्तज ईमा बयकीन।

अर्थ– देश से प्रेम करना ईमान का भाग है।

4) तुर्क हिन्दुस्तानियम मन हिन्दवी गोयम जनाव।

अर्थ– मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ और हिन्दवी में जवाब देता हूँ।

5) तर्जी हे मुल्के हिन्द व अवलज हवाए खुश बर रूमी, बर इकाको–खुरासानो–कन्दहार।

अर्थ– भारत की जलवायु, रूस, ईराक, खुरासान और कन्दहार से बेहतर है इस लिए मैं इसे सभी देशों पर तरजीह (वरीयता) देता हूँ।

6) बसं हमाहाल ज़खूवी बबिही, हिन्द बहिश्त अरुतव सवात रही।

अर्थ– हिन्दुस्तान अपनी नैसगिक देनों के कारण बहुत समृद्ध है जो स्वर्ग से बढ़कर है।

7) गरचे कि बर निस्बते फिरदोशिनिहां बाहमा लुत्फोश जिंदा अस्त जहाँ।

अर्थ– मुसलमान सारी दुनिया को कैदखाना समझते हैं लेकिन हिन्दुस्तान में जो हवा बहती है उस से यह उनके लिए स्वर्ग बन गया है।

8) खलक भी गोयद कि खुसरो बुत परस्ती भी कुनद। आरे–आरे मी कुनमला खलक व दुनिया कार नीस्त।।

अर्थ– दुनिया कहती है कि खुसरो बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) करता है। हाँ हाँ मैं करता हूँ मेरा दुनिया से कोई सरोकार नहीं ।

9) ऐ केज बुत ताअनाब हिन्दु बरी, हमज़वे आमोज परितश गरी।

अर्थ– तू जो हिन्दू पर उसके उसके मूर्ति पूजक होने के कारण कटाक्ष करता है तू उससे तन्मय होकर इबातद करना भी सीख।

खुसरो की हिन्दी कविताओं में यह मुकरनी उसके भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम की परिचायक है।

वक्त बेवक्त मोहे वा की आस
रात दिन वह रहत मेरे पास।
मेरे मन को करत सब काम
ऐ सखि साजन ना सखि राम।।

मुकरनी कविता की वह विधा जिस में एक बात कर कर उस से मना कर देते हैं। श्रीराम दशरथ नन्दन के रूप में अयोध्या में, सांसारिक जनों के बीच अवतरित हुए। उन्हें मानव समाज के हर वर्ग ने अपना सा पाया। वह मानव सम्बन्धों की सात्विक मर्यादाओं के आदर्श सब को दर्शा गए। सब जनों में भारतीय संस्कृति की गरिमा उजागर कर गए। आज राम भक्तों के लिए श्रीराम साकार, निराकार, आध्यात्म, दर्शन, सामाजिक परम्परा, पारिवारिक मर्यादा अनेकों आस्थाओं, चिन्तन तथा आदर्शों का समन्वित रूप हैं। राम तो तुलसी, कबीर तथा गांधी के भी थे। अनेक विचारकों ने हर एक के राम की अनेकों प्रकार से व्याख्या की है। भविष्य में भी करते रहेंगे "राम अनन्त राम कथा अनन्ता"

भारत वर्ष के ऐसे अनन्त आयामी आस्था के सांस्कृतिक स्वरूप का मन्दिर उसी की जन्म भूमि पर बनाने का पुण्य कर्म कैसे वातावरण में करना उचित होगा, यह भी एक मननीय विषय है। इस मन्दिर का निर्माण किसी आन्दोलन, किसी सभा या संसद के प्रस्ताव, किसी न्यायालय के निर्णय, या किसी विवाद के सुलझने का परिणाम होना कभी भी उचित नहीं है। लंका तक पहुचंने के लिए जब राम सेतु बना था तो प्रकृति का हर रूप सहयोग करने को उद्यत था। राम सेतु बनाते समय जैसा वातावरण बना था वैसा ही वातावरण निर्मित करने का ही प्रयत्न करना पहला धर्म है। राम मन्दिर उन्माद स्वरूप बना मात्र वास्तुशिल्प ही नहीं होना चाहिए। राम मन्दिर राम भक्तों की भक्ति का ही प्रतीक होना चाहिए। राम भक्तों को राम भक्ति के हर अंश का धैर्य से संचयन करना चाहिए चाहे इस में कुछ समय क्यों न लग जाए।

राम कथा का लेखन भारत की हर प्रमुख भाषा में हुआ है। राम कथा अन्य अनेक देशों में भी लिखी गई है। राम कथा के विस्तार पर श्री कमिल बुल्के ने परिश्रम पूर्वक गहन शोध किया है। राम जन्म भूमि से सम्बध संस्थाओं तथा संगठन को हर भाषा तथा हर देश में लिखी गई रामायणों को एकत्र कर, राम जन्म भूमि पर, उनकी पूरी जानकारी सहित प्रदर्शित करना चाहिए। इस से रामभक्तों को श्री राम के विस्तृत स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा।

राम भक्तों को पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि राम मन्दिर का निर्माण उन की ही भक्ति के बल पर निर्भर है। ऐसी भक्ति जैसी श्री राम को गंगा पार उतारने से पूर्व खेवट ने प्रदर्शित की थी। राम मन्दिर ऐसी लगन से बनेगा जैसी लगन राम सेतु पर रेत डालने में छोटी सी गिलहरी ने दर्शाई थी। राम मन्दिर ऐसी आस्था से बनेगा जैसी आस्था रखते हुए, रहीम का हाथी, गंगा तट पर, तुलसी की कुटिया के पास खड़े हुए अपने सिर पर रेत डाल रहा था। राम मन्दिर बनेगा तो ऐसे देश प्रेम से जिस देश प्रेम के वशी भूत हो भारत का गुण गान करतें हुए अमीर खुसरो अपने हर काम का श्रेय राम को देने लगा था। राम मन्दिर निर्माण से पूर्व, राम भक्तों में सहभागिता के वातावरण का सृजन करना अत्यन्त आवश्यक है। राम सेतु वाले सहभागिता के वातावरण के सृजन के लिए सभी राम भक्तों को अपने भक्ति भाव पर पूर्ण भरोसा रखना नितांत आवश्यक है। लाखों भक्त जन, प्रति वर्ष, राम लला के दर्शन करने अयोध्या आते हैं। जो भी भक्त अयोध्या आएं, उनसे मेरा निवेदन है, अपने संग गंगा तट से इतनी रेत राम लला की जन्म भूमि पर अपने साथ ले जाएं जितनी रेग गिलहरी एक बार में जा कर राम सेतु पर डाला करती थी। राम जन्म भूमि पर एक निर्धारित स्थान पर उस रेत को रखने की व्यवस्था हो। प्रति दिन सायंकाल, उस रेत को, आरती के पश्चात उपस्थित जन राम जन्म भूमि पर बिखेर दिया करे। गंगा तो माता है। मात गंगा क्या राम लला पर अपनी ममता के आंचल से क्या राम जन्म भूमि की बाधा को दूर नहीं करेगी? अवश्य करेगी। एक दिन, गंगा तट के उस स्थान से भी, रामजन्म भूमि पर रेत पहुचेंगी जिस पर कभी रहीम और तुलसी हाथ पकड़कर खड़े थे मंन्दिर में घंटियां बजने लगी थीं तथा माता गंगा की आरती हो रही थी। गंगा तट से राम जन्म भूमि तक रेत लाने वालों में तुलसी भी होंगे तथा रहीम भी होंगे।

तब वह वातावरण बनेगा जिस में राम के व्यापक रूप के दर्शन होंगे। राम भक्तों के कर्म योग तथा भक्ति योग से विश्व स्तरीय राम मन्दिर बनेगा। इस मन्दिर का आकार, विस्तार, सामग्री वास्तु शिल्प, वास्तु रूप विश्व स्तरीय होगा। इस मंन्दिर को बनाने संवारने के कार्य में भी विश्व स्तरीय विशेषज्ञ अपनी हर अद्भुत क्षमता का उपयोग करेंगे। यह मन्दिर इक्कीसवीं शताब्दी में बना भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल प्रतीक होगा। यह मन्दिर दशरथ की अयोध्या को भी जगत आराध्य बना देगा।

– ए–4/443, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली

शोक संवेदना

यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि श्रीमती नीता कोहली जी की पौत्री व श्री अश्वनी कोहली जी की सुपुत्री शिवानी उम्र 27 वर्ष, एक कार एक्सीडेण्ट में दिनांक 19.02.2016 को मृत्यु हो गयी। अचानक हुई इस दर्दनाक मृत्यु से परिवार व रिश्तेदारों में भारी शोक है। मैं अपनी ओर से एवं शुद्धि सभा के सभी अधिकारियों व सदस्यों की ओर से दिवंगत पुण्य आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हैं और कष्टमय परिवार को इस महान दुःख को सहन करने की ईश्वर शक्ति दे, ऐसी प्रार्थना करता हूँ।

श्रीमती नीता कोहली जी पिछले दो–तीन वर्षों से कनाडा में हैं और अपने अस्वस्थ पति का हर प्रकार से इलाज व सेवा कर रही हैं। वह प्रतिवर्ष अपने परिवार की ओर से आर्य समाज एवं आर्य समाज से जुड़ी धार्मिक संस्थाओं को आर्थिक सहयोग प्रदान कर रही हैं, जिनमें ऋषि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य कन्या गुरुकुलों, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली आदि।

–हरबंसलाल कोहली (कार्यकारी प्रधान)

पुरुषार्थ चतुष्टय

डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का सिद्धान्त भारतीय संस्कृति की विशेषता है। मनुष्य का आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक उन्नति को देखते हुए प्राचीन ऋषि महर्षियों ने इस सिद्धान्त की संरचना की तथा इसकी व्यवस्था की थी। पुरुषार्थ का अर्थ है- पुरुष का अर्थ अर्थात् मनुष्य जीवन का प्रयोजन, मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य, लक्ष्य अथवा प्रयोजन जिनके माध्यम से पूर्ण होते हैं वे हैं पुरुषार्थ चतुष्टय। मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य है- सुखी एवं शान्तमय जीवन। जब मनुष्य अपनी इच्छाओं को अथवा अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है तब वह सुखी हो सकता है। मनुष्य ही पुरुषार्थ की सिद्धि कर सकता है। पुरुषार्थो की संख्या चार मानी गई है- धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष।

धर्म

धर्म शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है- धारण करने वाला। **ध्रियते लोकोऽनेन, धरति लोकं वा,** जो संसार को धारण करता है वह धर्म है। धर्म ही प्रजा को धारण करता है। धर्म ही परिवार, समाज और राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करता है।

धारणाद् धर्ममित्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः।
यत् स्याद् धारणसंयुक्त स धर्म इति निश्चयः॥ महा. कर्ण. ६९/५९

महर्षि कणाद ने वैशेषिक सूत्र में लिखा है-

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।

अर्थात् जिससे अभ्युदय (भौतिक उन्नति) तथा निःश्रेयस आध्यात्मिक उन्नति होती है, वह धर्म है। वस्तुतः धर्म का सम्बन्ध मानव जीवन के आचरण के साथ जुड़ा हुआ है।

धृतिः क्षमादयोऽस्तेयं शोचमिन्द्रिय निग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ मनु ६/१२

धैर्य, क्षमा, मन पर नियन्त्रण, चोरी न करना, पवित्रता, इन्द्रियों पर अधिकार, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना ये धर्म के दश लक्षण हैं। जो कार्य और आचरण व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति करने के सहायक हैं, वे धर्म हैं। अवनति की ओर अग्रसर करने वाला व्यवहार एवं आचरण ही अधर्म हैं।

शुक्रनीति में राजधर्म के अन्तर्गत देशधर्म, जातिधर्म, कुलधर्म, सनातन धर्म, प्राचीन धर्म और नवीन धर्म का उल्लेख मिलता है।

देशधर्माः जातिधर्माः,
कुलधर्माः सनातनाः।
मुनिप्रोक्ताश्च ये धर्माः
प्राचीनाः नूतनाश्च॥ शुक्रनीति ४/९

भारतीय परम्परा में सबसे ज्यादा महत्त्व धर्म को ही दिया गया है। भर्तृहरि ने नीतिशतक में धर्म के सम्बन्ध में लिखा है एवं कहा है धर्म से रहित मनुष्य पशु के समान हैं-

येषा न विद्या न तपो न दानं।
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः॥
ते मर्त्यलोके भुविभारभूताः।
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

अन्यत्र भी उल्लिखित है कि धर्म ही वह तत्त्व है जो मनुष्य को पशुओं से अलग करता है। क्योंकि आहार, निद्रा, भय एवं सन्तान उत्पन्न करना ये चारों मनुष्य एवं पशुओं में समान हैं। धर्म के कारण मनुष्य की अलग पहचान है-

आहर निद्रा भय मैथुनं च
सामान्यमेतद् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।

धर्म के विषय में यहाँ तक कहा गया है-

धर्म एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्याद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्। मनु ८/१५

अर्थात् जो धर्म को मार देता है या छोड़ देता है, धर्म भी उसे छोड़ देता है और जो धर्म की रक्षा करता है धर्म भी उसकी रक्षा करता है।

महाभारत में वेदव्यास लिखते हैं-

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्
धर्म त्येजीवितस्यापि हेतोः।
धर्म नित्यः सुख दुःखे त्वनित्ये
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः।
महा. स्वर्गारहिण पर्व ५/६३

अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, भय तथा जीवन के डर से भी धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि सुख, दुःख, जीवन आदि तो अनित्य हैं नित्य तो केवल धर्म है।

कुमार सम्भव में कालिदास ने धर्म को त्रिवर्ग का सार कहा है-

अजेन धर्मः सविशेषमद्य मे त्रिवर्गसारः प्रतिभाति भाविनि कुमार ५/३८

भारतीय संस्कृति में धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं है। भारतीय परम्परा में सदाचार, अहिसापालन तथा कर्तव्य बुद्धि को धर्म कहा गया है। अपना कर्तव्य पालन ही सबसे बड़ा धर्म है एवं कर्तव्य से विमुख होना अधर्म है। धर्म का कोई बाह्य चिह्न नहीं होता है।

न लिङ्गं धर्म कारणम्।

धर्म का सम्बन्ध तो आत्मा से है तभी किसी भद्र व्यक्ति को धर्मात्मा कहा जाता है।

अर्थ

भारतीय जीवन दर्शन मे भौतिक उन्नति एवं आध्यात्मिक उन्नति का समान महत्त्व है। जैसे एक पहिये की गाड़ी चल नहीं सकती ऐसे ही एक ही उन्नति से जीवन चल नहीं सकता है।

चाणक्य सूत्राणि 1.1.2 में लिखा है-

सुखस्य मूलं धर्मः – अर्थात् सुख का मूल धर्माचरण है तथा धर्मस्य

मूलम् अर्थः – धर्म का मूल अर्थ है। अर्थात् अर्थ से ही धर्माचरण सम्भव है। वेद मे भी लिखा है-

वयं स्याम पतयो रयीणाम्।

अर्थात् हम धन ऐश्वर्य के स्वामी बनें। मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति (रोटी, कपड़ा एवं मकान) अर्थ से ही संभव है। किसी नीतिकार का वचन है-

प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम्। तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति। यदि पहली अवस्था विद्या नहीं पढ़ी, दूसरी अवस्था (युवावस्था) में धन नहीं कमाया, तीसरी अवस्था में तप के द्वारा पुण्यार्जन नहीं किया तो चौथी अवस्था में वह व्यक्ति क्या करेगा?

नारद स्मृति में महर्षि नारद सभी कामों को अर्थमूलक मानते हैं तथा धनार्जन के लिए प्रेरित करते हैं-

अर्थमूलाः क्रियाः सर्वा यत्नस्तस्यार्जने मतः।

विद्या से विनय, विनय से पात्रता एवं पात्रता से धन एवं धन से धर्म यह संसार में प्रसिद्ध है-

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्। पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मः ततः सुखम्।

उद्यमी, शिष्टाचारी, संयमी एवं विनयीशील व्यक्ति धनार्जन उत्तम रीति से करता है।

हितोपदेश की प्रस्तावना श्लोक मे वर्णित है-

उद्योगिनं पुरूषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।

अर्थात् उद्योगी व्यक्ति को लक्ष्मी प्राप्त होती है। परन्तु व्यक्ति को सदा यह ध्यान रखना चाहिए कि अर्थ का अभाव एवं अर्थ का प्रभाव दोनों ही मनुष्य के लिए हानिकारक हैं। अर्थोपार्जन करते समय व्यक्ति को सदैव धर्म का ध्यान रखना चाहिए। अधर्मपूर्वक संचित अर्थ अनर्थ कर देता है। धन वही श्रेष्ठ है जो जीवन को धन्य कर दे।

अर्थ के कारण धरती को वसुन्धरा कहा गया है। आचार्य आनन्द वर्धन ने ध्वन्यालोक के प्रथम उद्योत में कहा है कि- वीर, विद्वान तथा सेवा करने की योग्यता वाले व्यक्ति ही धनार्जन कर सकते हैं-

सुवर्णपुष्पां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरूषास्त्रयः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्।

अन्न एवं वस्त्र को भी अर्थ की संज्ञा दी गई है। सभी नीतिशास्त्र धनी की प्रशंसा एवं निर्धन की निन्दा में हजारों श्लोक लिखे हैं-

भर्तृहरि का कथन है-

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
सःपण्डितःस श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीय
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति॥

अर्थात् जिसके पास अर्थ है वही श्रेष्ठ है, वही कुलीन है, वही विद्वान , वक्ता, गुणी, दर्शनीय है क्योंकि सारे गुण धनाश्रित हैं।

निर्धन व्यक्ति का जीवन अभिशाप की भांति है उसकी कोई बात नहीं सुनता, मित्र तथा पारिवारिक जन भी तिरस्कार का भाव रखते हैं, उसका गुण भी दोष हो जाता है। मृच्छकटिक में चारूदत्त की निर्धतना का वर्णन करते हुए बताया गया है कि वह अतिशय कष्ट का अनुभव करता है। भर्तृहरि ने धन को जाति, गुण समूह, सदाचार, कुलीनता, वीरता आदि की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध किया है ।

राजतन्त्र की दृष्टि से भी अर्थ

सबसे महत्त्वपूर्ण है। राज्य की सप्ताङ्ग प्रकृति में कोश को प्रमुख माना गया है-

कोशमूलाः सर्वरम्भाः।
कौटिल्य अर्थ २/८/१

भारतीय चिन्तन में धर्मानुसार धनोपार्जन श्रेष्ठ माना गया है तथा- अतिव्यय, अपव्यय, गवन आदि को दोष माना गया है।

काम का अर्थ है- कामना, इच्छा, स्नेह, अनुराग, प्रेम, अभिलाषा, विषय, इच्छित पदार्थ। काम का सृष्टि में असंख्य आधार है। जैसे- विषय के प्रति काम विषयेच्छा है। धन के प्रति काम-लोभ है। व्यक्ति विशेष की कामना मोह है। स्व की कामना अहंकार है, प्रभु की कामना भक्ति है, किसी निष्ठा में कामना विश्वास है आत्मीयता में काम स्नेह है, धारणा स्थित काम श्रद्धा है। प्रजापति ने कामना की मैं एक से बहुत हो जाऊं- सोऽकामयत एकोऽहं बहुस्यां प्रजायेतेति। अतः उसने काम के द्वारा सृष्टि की रचना की।

काम

मनुष्य जीवन के उद्देश्यों में तीसरा पुरुषार्थ काम है। काम शब्द का प्रयोग इच्छा कामना, वासना के अर्थ में किया जाता है। **काम्यते कामयते येन यस्मिन् वा सः कामः** कमु कान्तौ धातु से काम शब्द की निष्पत्ति हुई है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार विषय और इन्द्रिय संयोग से उत्पन्न मानसिक आनन्द काम है। मनुष्य की सांसारिक यात्रा में जो स्थान धर्म और अर्थ का है वही स्थान 'काम' का भी है। इसलिए इन तीनों को 'त्रिवर्ग' कहा जाता है।

काम सभी श्रेष्ठ कार्यो का आधार है। किसी को आशीर्वाद दिया जाता है तो कहा जाता है- **सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।**

अर्थात् यजमान की सभी कामनाएं, इच्छाएं पूर्ण हों। काम सृष्टि के मूल में है। इसी से संसार की रचना आगे बढ़ती है। काम भाव गृहस्थ धर्म एवं सन्तान उत्पत्ति का मूल आधार है। जब मनुष्य अभिलषित पदार्थो की प्राप्ति के लिए उद्योग करता है वहीं 'काम' है। अपनी इच्छित वस्तु को पाकर जो आनन्द मिलता है वही काम है।

ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में कहा है-

काम से ही सृष्टिक्रम का विकास हुआ है- **कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेत प्रथमं यदासीत्।** ऋग्वेद 10/129/4

मनुष्य संसार में जो कुछ भी करता है उसके मूल में काम है, बिना काम के मनुष्य की कोई भी क्रिया नहीं हो सकती है-

अकामस्य क्रिया काश्चिद् दृश्यते नेह कर्हिचित्।
यद्यद्धि कुरूते किंचित् तत्तस्कामस्य चेष्टितम्।

वस्तुतः काम मानसिक संकल्प का परिणाम है।

कौटिल्य अर्थशास्त्र में कहा गया है-

धर्मार्थाविरोधेन कामं सेवेत। अर्थात् धर्म और अर्थ के अनुसार ही काम का सेवन करना चाहिए।

कालिदास ने यौवने **विषयैषिणाम्** रघु 1/8 तथा **प्रजायै गृहमेधिनाम्** लिखकर विवाह का उद्देश्य सन्तान उत्पत्ति मानकर काम को नियन्त्रित किया है। काम चेतन का सतत् स्वभाव है। काम प्राणी के अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। परन्तु काम केवल वासना रूप होने से व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है तथा इच्छित वस्तु के न मिलने पर क्रोध आदि का कारण भी बनता है

गीता में उल्लिखित है-

काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भवः। ३/३७
कामात्क्रोधोऽभिजायते। गीता २/६

महाभारत के शान्तिपर्व में धर्म और अर्थ के विरूद्ध काम का सेवन बुद्धि नाश का कारण माना गया है-

यो धर्मार्थौ परित्यज्य
काममेवानुसेवते।
स धर्मार्थपरित्यागात्
प्रज्ञानाशमिहार्च्छति।
महा. शान्ति पर्व १२३/१५

सारांशतः काम को पूरी तरह से छोड़ना तथा एकमात्र उसी को ही ग्रहण करना, ये दोनों ही अनुचित है। जब काम धर्मानुकूल एवं अर्थानुकूल होता है वही पुरुष का प्रयोजन, उद्देश्य पूर्ण करता है तथा पुरुषार्थ कहलाता है।

जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति में काम की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह भौतिक जीवन के संचालन का आधार है। भारतीय संस्कृति में योग और भोग के जीवन में समन्वय किया है। इन दोनों धाराओं को मर्यादित संयमित धर्मानुसार उपयोग व उपभोग करते हुए जीवन के लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए।

मोक्ष

ऋषियों का निश्चित मत है कि समस्त दुःखों से छूटकर पूर्णानन्द को प्राप्त करना ही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। इस बात को सांख्य शास्त्र के प्रणेता कपिल ने इन शब्दों में कहा है-

अथ त्रिविधदुःखात्यन्त
निवृत्तिरत्यन्तपुरूषार्थः।
(सांख्य १.१)

आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक, इन तीन प्रकार के दुःखों की अत्यन्त पूर्ण निवृत्ति कर देना अत्यन्त पुरूषार्थ है। क्योंकि-

विवेकानिःशेष दुःखनिवृत्तौ
कृतकृत्यो
नेतरान्नेतरात् (सांख्य ३.८४)

विवेक से समस्त दुःखों के हट जाने पर ही पुरूष कृतकृत्य होता है, अन्य किसी भी तरह से नहीं।

दुःखों से छूटने का उपाय मोक्ष प्राप्ति के अतिरिक्त और कोई नहीं है। अतः मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य मोक्षप्राप्ति अथवा आनन्द की प्राप्ति है।

मोक्ष का अर्थ है मुक्ति। दुःखों से मुक्ति ही मोक्ष है। मोक्ष पुरूषार्थ चतुष्टय में अन्तिम पुरूषार्थ है। धर्म, अर्थ, काम भौतिक है तो मोक्ष आध्यात्मिक है। हलायुध कोश में वर्णित है कि सभी आशाओं का विनाश ही मोक्ष है-

न मोक्ष नभसः पृष्ठे न पाताले न
भू तले।
सर्वाशासंक्षये चेतः
क्षयो मोक्ष इति श्रुतेः॥

सांख्यकारिका में उल्लिखित है-

प्राप्ते शरीरभेदे चरितार्थत्वात्
प्रधानविनिवृत्तै।
एकान्तिकमात्यन्तिकमुभयं
कैवल्यमाप्नोति॥

अर्थात् शरीर अन्त के समय, समस्त प्रयोजनों के सिद्ध हो जाने पर तथा प्रकृति की निवृत्ति हो जाने पर तत्त्वज्ञ पुरुष को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

श्रीमद् भगवद् गीता में मोक्ष के लिए ब्रह्मनिर्वाण शब्द का प्रयोग हुआ है।

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः
क्षीणकल्मषाः
छिन्नद्वैधा यतात्मानः
सर्वभूतहिते रताः॥

त्रिवर्ग के पारस्परिक सम्बन्ध का निष्कर्ष है- मोक्ष। अर्थ का मूल धर्म तथा अर्थ का फल है काम। अर्थ का वृक्ष धर्म के बीज से उत्पन्न होता है तथा काम फल फलता है। इस त्रिवर्ग का मूल है निवृत्ति जिसे मोक्ष कहा जाता है। यह तथ्य महाभारत में वर्णित है-

धर्ममूलः सदैवार्थः
कामोऽर्थफलमुच्यते।
मूलमेतत् त्रिवर्गस्य निवृत्तिर्मोख
उच्यते॥

आई बनकर वरदान तीखी छुरियों की धार

तर्ज- हम सब आए दाता मिलकर तेरे दरबार
तेरी जय जय जयकार, गावे सारा संसार।
जागा सारा संसार, तेरी सुनकर हुँकार ।।

निर्भय योद्धा नरनामी, वैदिक पथ के अनुगामी।
दुःखड़े जाति के टारे, प्यारे ज्ञानी बलिदानी ।।
सच्चे ईश्वर-विश्वासी, झेले संकट हज़ार......

तेरे साहस पै वारी, तुझ पर प्सारे बलिहारी ।
तू था ऋषियों की तान, दुनिया जाने यह सारी।।
तजकर सारे सुख साज, कीन्हा जीवन सञ्चार......

युग ने करवट जो बदली, काँपे सारे अन्यायी।
रोते देखे मिर्ज़ाई तर गई तेरी तरुणाई।।
आई बनकर वरदान तीखी छुरियों की धार ......

तेरा सुनकर सिंहनाद, जागे सोये अरमान ।
शत्रु हो गये हैरान, आई जाति में जान ।।
परहित जीना मरना, मतेरे जीवन का सर....

तेरा ऋण कितना भारी, जग के सच्चे हितकारी।
करते याद नर-नारी, चावा पायल की गाड़ी ।।
चलती गाड़ी से कूदे, लेकर उर में अंगार.....

पथिक! निराली देखी, तेरी वीरों में शान।
करते मिलकर गुणगान, करते हम सब अभिमान ।।
देता जन-जन को जीवन, तेरा निर्मल आचार.....

रहना सेवा में तत्पर, चाहे दिन हो या रात।
हम हैं मस्तक झुकाते, सुन-सुन तेरी हर बात।।
भूलें कैसे प्यारे, तेरा दलितों से प्यार....

स्वामी श्रद्धानन्द शूर, जिनके मुखड़े पै नूर।
'नाथू' 'तुलसी' सब खोजें, तेरे चरणों की धूर।।
बोले खंजर की धार, तेरा फूले परिवार.....

कर दो जाति के वीरो, उसके सपने साकार।
करके तन, मन, बलिदान, करिये सबका उद्धार ।।
आओ गायें 'जिज्ञासु' गूँजे सारा संसार....

23 मार्च पर विशेष :

युवाओं के प्रेरणा स्रोत-अमर बलिदानी भगतसिंह

देश-धर्म की बलिवेदी पर मात्र 23 वर्ष की किशोरावस्था में हँसते-हँसते प्राण न्यौछावर करने वाले भगतसिंह का जन्म 27 सितंबर 1907 को बंगा नामक ग्राम में हुआ जो की वर्तमान में पाकिस्तान में है। आपका परिवार क्रांतिकारियों का परिवार था जिस दिन आपका जन्म हुआ उसी दिन आपके पिता एवं चाचा के जेल से रिहा होने का समाचार परिवार वालों को प्राप्त हुआ इस कारण आपकी दादी ने आपका नाम 'भागोंवाला' कहा था। आपके पिता का नाम सरदार किशन सिंह तथा माता का नाम विद्यावती कौर था। आपका परिवार सिक्ख पंथ का अनुयायी था किन्तु आपके दादा अर्जुन सिंह जी ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित हो आर्य समाज की वैदिक विचारधारा से जुड़ गये थे कहा जाता है कि आपका यज्ञोपवीत आर्य समाज में हुआ था। आपकी शिक्षा-दीक्षा आर्य समाज के महात्मा हंसराज जी द्वारा लाहौर में स्थापित डी.ए.वी. स्कूल में हुई। परिवार से मिले देशभक्ति और क्रान्तिकारी विचारों के कारण बचपन से ही शस्त्रों के प्रति आपका गहन लगाव था एक दिन पिता को खेत में बीज बोते देखकर पिता से पूछा 'क्या बन्दूक की खेती नहीं की जा सकती? अध्ययन के दौरान आपका सम्पर्क लाला लाजपत राय से हुआ। ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त लाला लाजपत राय और रामप्रसाद जी बिस्मिल तथा अन्य वीर सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद, करतार सिंह सराबा आपके आदर्श पुरुष थे। गदर पार्टी की कथाएं, करतार सिंह सराबा का बलिदान, जलियावाला बाग का नृशंस हत्याकांड ने आप पर गहरा प्रभाव डाला आप अपनी पढ़ाई नौवीं कक्षा में छोड़कर असहयोग आंदोलन में कूद पड़े।

17 अप्रैल 1919 को जलियावाला बाग काण्ड के समय आपकी आयु मात्र 12 वर्ष की थी इतनी छोटी सी आयु में आप करीब 12 मील पैदल चलकर जलियावाला बाग पहुँचे थे। इस उम्र में अपने परिवार में क्रान्तिकारियों की किताबें पढ़कर असमंजस में रहते थे कि क्रान्तिकारियों का रास्ता सही है अथवा गांधी जी का? गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन रद्द कर देने पर अन्य युवाओं की भांति आपको भी रोष उत्पन्न हुआ और आप गरम दल में क्रान्तिकारी विचारों की ओर मुड़ गये। आपने भारत की स्वतंत्रता के कार्य हेतु युवाओं को जोड़ने हेतु "नौजवान सभा" की स्थापना की। ट्रेन में ब्रिटिश खजाना लूटकर "काकोरी काण्ड" के नाम से अंग्रेजों की चूले हिलाने वाले रामप्रसाद बिस्मिल सहित चार को फाँसी व 16 अन्य क्रान्तिकारियों को कारावास की सजा से अत्यंत आक्रोशित हुए। क्रांतिवीर करतार सिंह सराबा के सम्पर्क में आने पर उन्होंने वीर सावरकर द्वारा लिखित पुस्तक 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम पढ़ने के लिये दी, इससे भगतसिंह इतने प्रभावित हुए की बाद के प्रकाशित संस्करणों के लिये आपने भी सहायता की। जून 1924 में आप यरवड़ा (पूना) जेल में वीर सावरकर से मिले तथा क्रांति की प्रथम गुरु शिक्षा ग्रहण की, वीर सावरकर के क्रांतिकारी दल 'अभिनव भारत' से आपने बम बनाने की कला सीखी तथा आगरा में बम बनाने का कार्य किया।

वीर सावरकर से प्रेरणा पाकर ही आप चन्द्रशेखर आजाद से जुड़ गये तथा अपने द्वारा गठित 'नौजवान भारत सभा' का विलय 'हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोशिएसन' में कर दिया। इस संगठन का उद्देश्य था देश की स्वतंत्रता के लिये सेवाभावी, त्यागी और आवश्यकता पड़ने पर पीड़ा झेल सकने वाले नौजवान तैयार करना था। वर्ष 1928 में साईमन कमीशन के विरोध में शांति पूर्वक प्रदर्शन करने वाले प्रदर्शनकारियों पर अंग्रेज सरकार ने बर्बरता पूर्वक लाठीचार्ज किया प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व कर रहे लाला लाजपत राय बुरी तरह घायल हो गये जिनकी उपचार के समय मृत्यु हो गई। लालाजी की मृत्यु ने देशभक्त युवा नौजवानों को हिलाकर रख दिया। चन्द्रशेखर, भगतसिंह तथा साथियों की योजना बनी की लाठीचार्ज के जिम्मेदार पुलिस सुपरिडेंट स्काट को मारकर बदला लिया जावें। 17 दिसम्बर 1928 को करीब सवा चार बजे पहचानने में त्रुटी होने के कारण स्काट के स्थान पर ए.एस.पी. सॉण्डरस को राजगुरु ने सिर में एक गोली मारी तथा भगतसिंह ने 3-4 गोली सॉण्डरस पर दाग कर उसका काम तमाम कर लालाजी की मौत का बदला ले लिया। इस योजना में आपके साथ थे राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद और जयगोपाल। भगतसिंह यद्यपि रक्तपात के पक्षधर नहीं थे तथा तथा वे कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों से भी प्रभावित थे तथा समाजवाद के पक्के पोषक थे, इस कारण पूंजिपतियों के द्वारा मजदूरों के शोषण के विरूद्ध थे, चूंकि उस समय अंग्रेज सर्वेसर्वा थे, वे नहीं चाहते थे कि भारतीय उद्योग उन्नति कर पाये इस कारण अंग्रेजों की नीति भारतीय मजदूरों पर अत्याचार की रहती थी। ऐसी अंग्रेज नीतियों का विरोध करना स्वाभाविक था। वे और उनके सहयोगी साथियों का विचार था कि रोज-रोज की छूट-पुट घटनाओं और रक्तपात के स्थान पर कोई ऐसा धमाका किया जावें जिसकी गूँज सात समंदर पार भी सुनाई दे और अंग्रेजी हुकुमत पूरी तरह हिलकर रह जाए, इनके लिये उन्होंने बटूकेश्वर दत्त को साथ लेकर 8 अप्रैल 1929 को केन्द्रीय असेम्बली में ऐसे खाली स्थान पर बम फेंका जिससे किसी की प्राण क्षति न हो, बम फटने के धूएं से हॉल भर गया आपके पास भागने का पूरा अवसर था किन्तु आप भागे नहीं और 'इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद' के नारे लगाये तथा अपने साथ लाये हुए परचे असेम्बली में फेंके जिस पर लिखा हुआ था 'बहरों को सुनाने के लिये धमाकों की जरुरत है' तथा शान्तभाव से अपनी गिरफ्तारी दी।

साण्डर्स हत्याकाण्ड के बाद से अंग्रेज सरगर्मी से इस हत्याकाण्ड के जिम्मेदारों को तलाश रही थी किन्तु असफल रही थी, नेशनल असेम्बली में बम काण्ड के बाद अंग्रेजों ने अपनी पूरी शक्ति क्रान्तिकारियों के सफाये पर लगा दी। साम-दाम-दण्ड-भेद की नीति अपनाकर सुखदेव व राजगुरु को भी गिरफ्तार कर लिया गया तथा आप तीनों को फाँसी की सजा सुनाई गई। फाँसी का दिन निर्धारित किया गया। 23 मार्च 1931, जेल में भी आप चैन से नहीं बैठे, क्रान्तिकारी बन्दियों के साथ 64 दिन की भूख हड़ताल अंग्रेजों के अत्याचारों के विरुद्ध की जिसमें आपके साथी यतिन्द्रदास की मृत्यु हुई।

जन विरोध की आशंका में आप तीनों को एक दिन पहले 22 मार्च की शाम करीब 7 बजकर 33 मिनिट पर फाँसी पर लटका कर गुप-चुप तरीके से आप लोगों की लाशों को टुकडों में बोरियों में भरकर सतलुज नदी के किनारे मिट्टी का तेल छिड़क कर जलाने का वीभत्स कार्य अंग्रेजों ने किया।

जब आपको फाँसी पर चढ़ाने हेतु ले जाने के लिये आये तब आप रामप्रसाद बिस्मिल की जीवनी पढ़ रहे थे, पुस्तक हवा में उछाल कर ऐसे चल पड़े मानो बिस्मिल से मिलने जा रहे हो। आपने रामप्रसाद बिस्मिल के दिशा-निर्देशों का अक्षरशः पालन किया।

आप तीनों ने फाँसी पर चढ़ने के पूर्व मिलकर गीत गुनगुनाया -

मेरा रंग दे बसंती चोला, मेरा रंग दे।
मेरा रंग दे बसंती चोला,
माय रंग दे बसंती चोला।।

आपको फाँसी पर चढ़ाने से अंग्रेज भी घबरा रहे थे। भगतसिंह की योजना को अंग्रेज समझ चुके थे कि आपको फाँसी पर चढ़ाने से जनता आक्रोशित हों जावेगी, आपको माँफी का प्रस्ताव दिया गया जो आपने ठुकरा दिया। गांधी जी चाहते तो आप लोगो को फाँसी से बचाया जा सकता था इस कारण भी लोगों में आक्रोश था, लाहौर अधिवेशन में जाते समय लोगों ने विरोध स्वरूप गांधी जी को काले झण्डे दिखाये।

भारत माँ के इस महान् सपूत को बलिदान दिवस पर समस्त देश प्रेमियों की ओर से शुद्धि समाचार का शत्-शत् नमन्!

- साभार - वैदिक संसार

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री 'विश्व वेदप्रचारक सम्मान' से विभूषित

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान एवं यशस्वी लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को 17 जनवरी 2016 को आर्यसमाज रमेश नगर नई दिल्ली ने 'विश्व वेद प्रचारक सम्मान' से विभूषित किया। उन्हें यह सम्मान मारीशस में सफल वेदप्रचार कर स्वदेश लौटने एवं वैदिक सिद्धान्तों व मूल्यों के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए वैदिक सत्संग समारोह में प्रदान किया गया।

सम्मान रूप में उन्हें शाल, माल्यार्पण, सम्मान राशि एवं प्रशस्ति पत्र विनम्रता पूर्वक आर्य समाज रमेश नगर के यशस्वी प्रधान श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ महामंत्री श्री विनय आर्य जी एवं माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रि. अरूण आर्य जी द्वारा प्रदान किया गया।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी का परिचय देते हुए कार्यक्रम के संचालक ने कहा कि आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी विलक्षण प्रतिभा के धनी, ओजस्वी वक्ता, देश–विदेश में ध्यान साधना शिविरों के आयोजक, अध्यात्म पथ के यशस्वी संपादक, अनेक स्तरीय ग्रन्थों के लेखक, वेदादि शास्त्रों के प्रखर चिन्तक एवं 70 पुस्तकारों एवं सम्मानों से विभूषित हैं। जिनमें आर्य विभूषण पुरस्कार, विद्यामार्तण्ड पुरस्कार, बिहारीलाल भाटिया पुरस्कार, सरस्वती रत्न सम्मान, साहित्य सृजन सम्मान आदि उल्लेख्य हैं।

ऐसे वैदिक विद्वान को सम्मानित करने में हम गौरव का अनुभव करते हैं।

–नरेन्द्र आर्य 'सुमन' (प्रधान)

प्रो. डा. अभिमन्यु कुमार और आचार्य विद्याप्रसाद का सार्वजनिक अभिनंदन

30 जनवरी स्वतन्त्रता सेनानी एवं महाशय मनफूल सिंह आर्य स्मारक समिति पलवल 27वें प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया, इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती थे।

समारोह में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान दिल्ली के निदेशक डा. अभिमन्यु कुमार और आर्य समाज के चिन्तक आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र का सार्वजनिक अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सांसद एवं मुम्बई पुलिस के पूर्व आयुक्त डा. सत्यपाल सिंह ने कहा कि वेद मार्ग पर चलकर ही घर समाज व देश में शान्ति स्थापित की जा सकती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय निर्माण पार्टी के प्रधान ठाकूर विक्रम सिंह ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि दिल्ली सरकार के पूर्व स्पीकर डॉ. योगानन्द शास्त्री और डी.ए.वी स्कूल पलवल श्रीमती अलका गुप्ता, आर्य समाज के पं. वेद पाल शास्त्री, योग परिवार से योगी अनुराग (दीपू) हरि चन्द्र शास्त्री, आदि ने अपने विचार रखे।

इस समारोह में धन्यवाद समिति के अध्यक्ष डॉ. धर्मप्रकाश आर्य ने की।

–धर्मप्रकाश आर्य (प्रधान)
महाशय म. सिंह आर्य स्मारक सिमिति

माता पिता के सान्निध्य में मुस्लिम युवति की शुद्धि एवं हिन्दू युवक से विवाह–संस्कार सम्पन्न

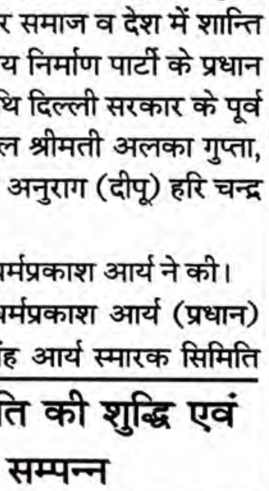

इन्दौर आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर में सुश्री अन्नु खान का शुद्धि संस्कार के पश्चात् सुश्री मुस्कान आर्या नाम रखा गया, इसके पश्चात श्री भारत यादव के साथ आचार्य भानुप्रताव वेदालंकार के आचार्यत्व में वैदिक विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। इस शुद्धि संस्कार एवं विवाह संस्कार में कन्या–दान (कन्या–प्रतिग्रहण) श्री आसिफ खान एवं श्रीमती सोना खान के सान्निध्य में हुआ।

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार ने बताया की सुश्री मुस्कान एवं भारत का रिश्ता भी आर्य समाज संचार नगर के माध्यम से निश्चत हुआ था। श्री आसिफ खान की आस्था तो मुस्लिम धर्म में है किन्तु उनकी श्रीमती सोना खान की आस्था हिन्दू धर्म में है। अतः सभी पुत्रियों का विवाह हिन्दू समाज में करने का निश्चय किया। इस अवसर पर आर्य समाज के समस्त अधिकारियों ने बधाई दी।

–ओमप्रकाश देवड़ा

फरवरी –2016 के आर्थिक सहयोगी

आर्य समाज डी–ब्लाक, विकास पुरी, नई दिल्ली		11000/–
श्री अशोक सहदेव जी, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली		5000/–
श्री जगदीश सरला धर्मार्य ट्रस्ट, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली	वार्षिक सहायता	5000/–
ई. वेद प्रकाश मुनि जी, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार	वार्षिक सहायता	3000/–
श्रीमती स्वतन्त्रलता शर्मा जी, वसन्त नगर बगलौर	त्रैमासिक	1500/–
आर्य समाज मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली		1000/–
श्री जी. एस. सरीन जी मंत्री आर्य समाज मानसरोवर गार्डन	व्यक्तिगत	1000/–
आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के. पी. गुप्ता जी, सै. 15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगलौर, कर्नाटक	मासिक	750/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी, महामंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्री आशीष किंगर जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	आजीवन	300/–
श्रीमती राज सेठी जी, विजय नगर, दिल्ली	मासिक	100/–
श्री कमलेश त्रिवेदी जी, स्थान पो. कनड़ शाहजहापुर, म.प्र.	आजीवन शुल्क दान	500/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

कु. गरिमा जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/–
श्री सौरभ चौधरी जी, जी–ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
श्रीमती ऊषा कुकरेजा जी, विकास पुरी, नई दिल्ली		50/–
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
श्री सुखदेव महाजन जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
डॉ. पुष्पलता वर्मा जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–

विशेष धन्यवाद

(1) आर्य समाज डी–ब्लाक विकास पुरी (नई दिल्ली) के रविवारीय सत्संग में श्री कोहली जी ने उपस्थित सभी अधिकारियों व आर्य महानुभावों से शुद्धि कार्य को बढ़ाने में सहयोग देने की अपील की और "शुद्धि समाचार" मासिक के आजीवन सदस्य बनने के लिए निवेदन किया। इस पर आर्य समाज अधिकारियों ने आर्य समाज की ओर से 11000/– रु. की राशि प्रदान की, और अपनी आर्य समाज के 20 अन्तरंग सदस्यों को शुद्धि समाचार का आजीवन सदस्य बनाया है और शुल्क के रूप में 6000/– रु. की राशि शुद्धि सभा को उपलब्ध करवायी अभी तक एक आर्य समाज इतनी संख्या में आजीवन सदस्य नहीं बने हैं और आर्य समाज डी–ब्लाक इसके लिए सबसे आगे हैं। आर्य समाज की ओर से भरपूर सहयोग के लिए मैं प्रधान श्री हरीश कालरा जी एवं उनकी टीम का तथा स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती विनीता चावला जी का आभार प्रकट करता हूँ।

(2) आर्य समाज मस्जिद मौठ (नई दिल्ली) की ओर से फरवरी 2016 में शुद्धि सभा को 8000/– रु. की आर्थिक सहयोग शुद्धि समाचार की छपाई का एक माह का व्यय की राशि प्रदान की है, यह राशि मार्च 2016 अंक के लिए प्रदान की गयी है, इसके लिए में आर्य समाज के प्रधान श्री चतर सिंह नागर जी (जो शुद्धि सभा के मंत्री भी है) और दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मन्डल के महामंत्री हैं का आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने सर्व प्रथम यह सराहनीय सहयोग प्रदान किया और हमारा उत्साह बढ़ाया है। आर्य समाज मस्जिद मौठ, एवं दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मन्डल की ओर से समय–समय पर शुद्धि सभा को आर्थिक सहयोग प्राप्त होता रहा है।

–हरबंस लाल कोहली

शुद्धि संस्कार

1– गत माह फरवरी में एक यवन मत युवती और एक ईसाई युवक ने स्वेच्छा से वैदिक (हिन्दू) धर्म अपनाया। यह शुद्धियां हमारे प्रचारक जी द्वारा केरल राज्य में हुई हैं। शुद्धि संस्कार के पश्चात इनका हिन्दू धर्म अपनाने पर हार्दिक स्वागत किया गया और इन्हें वैदिक साहित्य दिया गया।

2– उत्तर प्रदेश के हमारे प्रचारक श्री शेखर आर्य ने भी एक यवन मत की युवती को वैदिक (हिन्दू) धर्म में उनकी इच्छानुसार दीक्षित किया और उसका विवाह संस्कार हिन्दू धर्म के युवक से सम्पन्न करवाया।

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 07-03-2016 (pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17

सेवा में,

शुद्धि समाचार

मार्च – 2016

रक्तसाक्षी पं. लेखराम संक्षिप्त परिचय

जन्म – आठ चैत्र विक्रम संवत् 1915 को ग्राम सैदपुर जिला झेलम पश्चिमी पंजाब में। पिता जी का नाम पण्डित तारासिंह व माता जी का नाम भागभरी (भरे भाग्य वाली) था।

शिक्षा– मिडिल तक उर्दू फ़ारसी की शिक्षा अपने ग्राम में व पेशावर में प्राप्त की। फ़ारसी के सभी प्रमाणिक साहित्यिक ग्रन्थों को छोटी सी आयु में पढ़ डाला।

काव्य –रचना – प्राथमिक शाला में ही उर्दू व पंजाबी में तुकबन्दी करने लग गए।

सरकार की सेवा में – 21.12.1875 को अपने चाचा पं. गण्डाराम के प्रभाव से पुलिस विभाग में भरती हो गए। उन्नति करते-करते सारजैण्ट के पद तक पहुँच गए।

ऋषि–दर्शन व हृदय-परिवर्तन– आप मत, पन्थों का अध्ययन करते रहते थे। कभी किसी मत में तो कभी किसी मत में रहे। प्रसिद्ध सुधारक मुंशी कन्हैयालाल जी के नीतिप्रकाश पत्र से महर्षि दयानन्द की जानकारी पाकर ऋषि-दर्शन के लिए अजमेर गए। 16 मई सन् 1881 को ऋषि के प्रथम व अन्तिम बार दर्शन किये। शंका-समाधान किया। उपदेश सुने व सदा के लिए वैदिक धर्म के लिए जीवन समर्पित कर दिया।

सरकारी सेवा पर लात मार दी – महर्षि के बलिदान के पश्चात् सितम्बर 1884 में सरकारी सेवा पर लात मार कर मानवीय दासता से मुक्त हो गए।

आर्यगज़ट के सम्पादक – 1887 ई. में फ़ीरोज़पुर छावनी में आर्यगज़ट साप्ताहिक उर्दू के सम्पादक बनकर वैदिक धर्म की धूम मचा दी।

ऋषि–जीवन की खोज – 1888 ई. में महर्षि के जीवन की सामग्री की खोज में देश का भ्रमण, शास्त्रार्थों, साहित्य-सृजन व व्याख्यानों से आर्य जाति में नवजीवन का संचार किया।

विवाह – 1893 ई. में एक सरल धार्मिक स्वभाव की कन्या लक्ष्मीदेवी से विवाह हुआ। तब आप 35 वर्ष के थे।

बलिदान–पथ के राही–कादियानी नबी ने गौ, श्री रामचन्द्र जी, कौशल्या, श्रीकृष्ण महाराज, वेद भगवान्, उपनिषदों पर घृणित वार कियें। हिन्दू जाति को अपना शिकार बनाया। तब आपने कादियाँ पर चढ़ाई करके मिर्ज़ा को ललकारा–

शहीद अकबर ने ललकारा, बेचारा घर में ही हारा।
यह देखा सब ने नजारा, वह मिर्ज़ा कादियाँ वाला।

12 वर्ष तक आप सत्य का मण्डन करते हुए मिर्ज़ा को शास्त्रार्थ की चुनौती देते रहे। छह मार्च 1887 को मिर्ज़ा गुलाम अहमद ने एक छलिये पापी से आपकी हत्या करवा दी। धर्म की वेदी पर वीरतापूर्वक आपका बलिदान एक गौरवपूर्ण स्वर्णिम इतिहास है।

क्या अन्त तेरा हो गया तीखी छुरी की धार से।
तूने अमर पद पा लिया उपकार से, उपकार से।।

– राजेन्द्र जिज्ञासु

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द उत्सव सम्पन्न

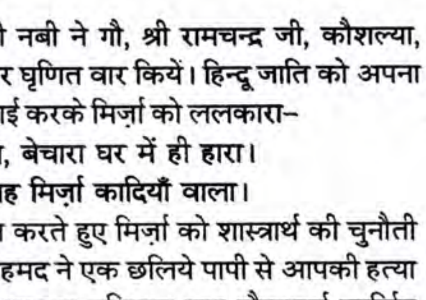

इन्दौर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. के द्वारा 192, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर श्रीमती सुमित्रा महाजन (लोकसभा अध्यक्ष, एवं सासंद इन्दौर) को महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित अमरग्रंथ-कालजयी सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया। श्रीमती सुमित्रा महाजन ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का आज समस्त समाज ऋणी है, विशेष कर हमको शिक्षा– यज्ञ– वेद आदि का अधिकार दिलाकर, स्त्री जाति को "मातृ देवो भव" का सम्मान दिलाया। अतः इस ऋण से उऋण होने के लिए हम सभी को वैदिक सिद्धान्तों को मानना चाहिए। अभी अभी इन्दौर में पहली बार "वेद सम्मेलन" भी करना यह सभी ऋषि की देन है।

अमर शहीद सुखदेव

सुखदेव (पंजाबी) का पूरा नाम सुखदेव थापर था। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रान्तिकारी थे। उन्हें भगत सिंह और राजगुरु के साथ 23, मार्च 1931 को फाँसी पर लटका दिया गया था। इनकी शहादत को आज भी सम्पूर्ण भारत में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। सुखदेव भगत सिंह की तरह बचपन से ही आजादी का सपना पाले हुए थे। ये दोनों लाहौर नेशनल कॉलेज के छात्र थे। दोनों एक ही सन में लायलपुर में पैदा हुए और एक ही साथ शहीद हो गए।

जीवनचरित

सुखदेव थापर का जन्म पंजाब के शहर लायलपुर में श्रीयुत् रामलाल थापर व श्रीमती रल्ली देवी के घर विक्रमी सम्वत 1964 के फाल्गुन मास में शुक्ल पक्ष सप्तमी तदनुसार 15 मई 1907 को अपरान्ह पौने ग्यारह बजे हुआ था। जन्म से तीन माह पूर्व ही पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण इनके ताऊ अचिन्तराम ने इनका पालन पोषण करने में इनकी माता को पूर्ण सहयोग किया। सुखदेव की तायी जी ने भी इन्हें अपने पुत्र की तरह पाला।इन्होंने भगत सिंह, कॉमरेड रामचन्द्र एवं भगवती चरण बोहरा के साथ लाहौर में नोजवान भारत सभा का गठन किया था। लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिये जब योजना बनी तो साण्डर्स का वध करने में इन्होंने भगत सिंह तथा राजगुरु का पूरा साथ दिया था। यही नहीं सन् 1926 में जेल में कैदियों के साथ अमानवीय व्यवहार किये जाने के विरोध में राजनीतिक बन्दियों द्वारा की गयी व्यापक हड़ताल में बढ़-चढ़कर भाग भी लिया था। गांधी-इर्विन समझौते के सन्दर्भ में इन्होंने एक खुला खत गांधी के नाम अंग्रेजी में लिखा था जिसमें इन्होंने महात्मा जी से कुछ गम्भीर प्रश्न किये थे। उनका उत्तर यह मिला कि निर्धारित तिथि और समय से पूर्व जेल मैनअल के नियमों को दरकिनार रखते हुए 23 मार्च 1931 को सायंकाल 7 बजे सुखदेव, राजगुरु और भगत सिंह तीनों को लाहौर सेण्ट्रल जेल में फाँसी पर लटका कर मार डाला गया। इस प्रकार भगत सिंह तथा राजगुरु के साथ सुखदेव भी मात्र 23 वर्ष की आयु में शहीद हो गये।

–ललित मैनी

अमर शहीद शिवराम हरि राजगुरु

राजगुरु भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रान्तिकारी थे। इन्हें भगत सिंह और सुखदेव के साथ 23 मार्च 1931 को फाँसी पर लटका दिया गया था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में राजगुरु की शहादत एक महत्वपूर्ण घटना थी। शिवराम हरि राजगुरु का जन्म भाद्रपद के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी सम्वत् 1965 (विक्रमी) तदनुसार सन् 1908 में पुणे जिला के खेडा गाँव में हुआ था। 6 वर्ष की आयु में पिता का निधन हो जाने से बहुत छोटी उम्र में ही ये वाराणसी विद्याध्ययन करने एवं संस्कृत सीखने आ गये थे। इन्होंने हिन्दू धर्म-ग्रन्थों तथा वेदों का अध्ययन तो किया ही लघु सिद्धान्त कौमुदी जैसा क्लिष्ट ग्रन्थ बहुत कम आयु में कण्ठस्थ कर लिया था। इन्हें कसरत (व्यायाम) का बेहद शौक था और छत्रपति शिवाजी की छापामार युद्ध-शैली के बड़े प्रशंसक थे। वाराणसी में विद्याध्ययन करते हुए राजगुरु का सम्पर्क अनेक क्रान्तिकारियों से हुआ। चन्द्रशेखर आजाद से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उनकी पार्टी हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी से तत्काल जुड़ गये। आजाद की पार्टी के अन्दर इन्हें रघुनाथ के छद्म-नाम से जाना जाता था । राजगुरु के नाम से नहीं। पण्डित चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह और यतीन्द्रनाथ दास आदि क्रान्तिकारी इनके अभिन्न मित्र थे। राजगुरु एक अच्छे निशानेबाज भी थे। साण्डर्स का वध करने में इन्होंने भगत सिंह तथा सुखदेव सिंह का पूरा साथ दिया था जबकि चन्द्रशेखर आजाद ने छाया की भाँति इन तीनों को सामरिक सुरक्षा प्रदान की थी। मार्च 23 1931 को इन्होंने भगत सिंह तथा सुखदेव के साथ लाहौर सेण्ट्रल जेल में फाँसी के तख्ते पर झूल कर अपने नाम को हिन्दुस्तान के अमर शहीदों की सूची में अहमियत के साथ दर्ज करा दिया।

–ललित भारद्वाज

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। **सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, सह सम्पादकः देवेश प्रकाश शास्त्री**